AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

बच्चों के लिए शिक्षा को एक समृद्ध और सुखद अनुभव बनाने के लिए गिजुभाई बधेका के विचारों पर एक अध्ययन

विवेक कुमार गुप्ता, डॉ. आर.के.एस. अरोड़ा

शोध छात्र, शिक्षा शास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर
शोध निर्देशक, शिक्षा शास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER/ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATIONIN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/PLAGIARISM/ OTHERREAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NO TBE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL.

सारांशः

शिक्षा मानव सभ्यता के विकास और प्रगति का प्रतीक और उपहार है। यह केवल एक राष्ट्र के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साथ ही नैतिक मूल्यों को प्रसारित करने का कार्य करता है (सत्तार, 1982:12)। इसे समाज की कुल व्यवस्था की एक उप–व्यवस्था के रूप में भी देखा जाता है जो विभिन्न सामाजिक संस्थाओं और धर्म, परिवार, राज्य, राजनीति, समुदाय या सामाजिक स्तरीकरण जैसी विचारधाराओं से प्रभावित या प्रभावित होती है (बुच, 1974: 92)। हालाँकि, हजारों साल पुरानी मानव सभ्यता ने शिक्षा की एक सार्वभौमिक परिभाषा या अवधारणा विकसित की है। फलतः जब भी शिक्षा के मामले में कोई भ्रांति या पाखंडपूर्ण आचरण देखने को मिलता है, वह हर समाज के जागरूक और शिक्षित व्यक्ति के सामने स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है। वे इस बात में अंतर कर सकते हैं कि शिक्षा क्या है और क्या नहीं। यहां आधुनिक समय में शिक्षा के संबंध में गहन चिंता का विषय आधुनिक पाठ्यचर्या में शिक्षा के विभिन्न बुनियादी सिद्धांतों या बुनियादी पहलुओं पर जोर देने की अनुपस्थिति या कमी है। शिक्षा प्रणाली नियमों और विनियमों पर बहुत अधिक केंद्रित थी और छात्रों में रचनात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षकों या माता–पिता के लिए कोई जगह नहीं थी। हालांकि शिक्षक भविष्य के नागरिकों के निर्माता हैं, लेकिन उन्हें अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की कोई स्वतंत्रता नहीं है। गिजुभाई बधेका के अनुसार शिक्षार्थियों और शिक्षकों की पृष्ठभूमि में अंतर शिक्षण और सीखने की खराब गुणवत्ता के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारकों में से एक है। उन्होंने बच्चों की पढ़ाई को लेकर कई अहम सवाल उठाए। उनकी कार्यप्रणाली सरल और ईमानदार है और शिक्षा पर बड़े पैमाने पर शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों और समाज द्वारा उठाए गए असंख्य सवालों का जवाब देती है। तकनीकी या

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

तथाकथित रोजगारोन्मुख शिक्षा पर अधिक जोर देने की यह प्रवृत्ति उन्हें शिक्षा के मूल सिद्धांतों या बुनियादी अवधारणाओं को कवर करने से बचने के लिए गुमराह करती है। पाठ्यचर्या डिजाइनिंग। परिणामस्वरूप आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रकार की शैक्षिक अराजकता चल रही है। शिक्षार्थी शिक्षा के आवश्यक उद्देश्यों को प्राप्त करने से कोसों दूर जा रहे हैं। वे इस बारे में बहुत कम सोचते और परवाह करते हैं कि शिक्षा और एक शिक्षित नागरिक के लक्ष्य और कार्य क्या हैं। शिक्षित समाज से समाज जो अपेक्षा करता है, उसे वे पूरा करने में विफल रहते हैं। इस प्रकार समाज भी शिक्षित वर्ग की लाभकारी शिक्षा एवं सेवाओं से वंचित रह जाता है। प्रस्तुत अध्ययन एक शिक्षाशास्त्री गिजुभाई बधेका के विचारों से हमारा परिचय कराने का एक प्रयास है, जिन्होंने शिक्षा को बच्चों के लिए एक समृद्ध और सुखद अनुभव बनाने के लिए एक नवीन दृष्टिकोण की वकालत की।

कुंजी शब्दः मोंटेसरी शिक्षा, बच्चों की शिक्षा, प्रयोग और शिक्षा में दिवास्वप्न

परिचय

प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी, गिजूभाई बधेका (1885–1939) ने सामान्य रूप से शिक्षा के मुद्दों और विशेष रूप से बच्चों की शिक्षा पर व्यापक रूप से लिखा। उनका योगदान बहुत ही सरल लेकिन प्रभावशाली और शक्तिशाली है। शिक्षा पर उनके विचार, विशेष रूप से बाल विकास और सीखने के प्रारंभिक वर्षों से संबंधित, आज भी अत्यधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने भारत में प्रचलित शिक्षा की औपनिवेशिक प्रणाली का विरोध किया क्योंकि उनका मानना था कि इस प्रणाली में शिक्षकों को नए विचारों को पेश करने या छात्रों को सीखने में रुचि विकसित करने के लिए प्रेरित करने के लिए बदलाव लाने की शायद ही कोई स्वतंत्रता थी। शिक्षा प्रणाली नियमों और विनियमों पर बहुत अधिक केंद्रित थी और छात्रों में रचनात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षकों या माता–पिता के लिए कोई जगह नहीं थी। हालांकि शिक्षक भविष्य के नागरिकों के निर्माता हैं, लेकिन उन्हें अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की कोई स्वतंत्रता नहीं है। गिजुभाई बधेका के अनुसार शिक्षार्थियों और शिक्षकों की पृष्ठभूमि में अंतर शिक्षण और सीखने की खराब गुणवत्ता के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारकों में से एक है। उन्होंने बच्चों की पढ़ाई को लेकर कई अहम सवाल उठाए। उनकी कार्यप्रणाली सरल और ईमानदार है और शिक्षा पर बड़े पैमाने पर शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों और समाज द्वारा उठाए गए असंख्य सवालों का जवाब देती है।

जीवन रेखाचित्र

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

गिरिजाशंकर बधेका, जिन्हें गिजूभाई के नाम से जाना जाता है, का जन्म 15 नवंबर, 1835 को हुआ था। वे गुजरात राज्य के एक शहर भावनगर में पले–बढ़े। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा वाला के एक प्राथमिक विद्यालय में की और बाद में 1905 के आसपास भावनगर से मैट्रिक पास की। उन्होंने शामलाल कॉलेज में प्रवेश लिया, लेकिन अपनी पढ़ाई पूरी नहीं की। वे जीविकोपार्जन के लिए 1907 में पूर्वी अफ्रीका गए। 1910 में वापस लौटने पर उन्होंने बंबई में कानून की पढ़ाई की। उन्होंने 1911 में एक जिला वकील के रूप में अपना अभ्यास शुरू किया और 1912 में उन्होंने खुद को उच्च न्यायालय के वकील के रूप में नामांकित किया। उनके व्यक्तित्व को ढालने में उनके मामा हरगोविंद पंड्या का काफी प्रभाव था। वह एसपी स्टीवंस के प्रभाव में भी आया, एक वकील जिसके लिए गिजूभाई ने पूर्वी अफ्रीका में काम किया था। स्टीवंस ने उनमें आत्म–सहायता और निर्भरता के मूल्यों के प्रति सम्मान पैदा किया।

गिजुभाई बधेका ने भारत में शिक्षा की मोंटेसरी प्रणाली की शुरुआत की। 1923 में अपने बेटे के जन्म के बाद, उन्होंने बचपन की शिक्षा और विकास में रुचि विकसित की। उन्होंने गुजरात के वासो में मोतीभाई अमीन के मार्गदर्शन में संचालित बाल शिक्षा कक्षाओं का बारीकी से अवलोकन किया। यहीं पर गिजूभाई को एक गुजराती पुस्तक भेंट की गई थी जिसमें शिक्षा के मोंटेसरी तरीकों का वर्णन किया गया था। 1915 में, उन्होंने दक्षिणमूर्ति (बाला भवन) की स्थापना में सहायता की और फिर भावनगर में एक छात्रावास शुरू किया। 1916 में, उन्होंने कानून छोड़ दिया और सहायक अधीक्षक के रूप में दक्षिणामूर्ति में शामिल हो गए।

मोंटेसरी शिक्षा

आज प्रचलित शिक्षा के लिए पारंपरिक दृष्टिकोण निर्धारित पुस्तकों और पाठ्यक्रम के एक सेट से छात्रों को ज्ञान के प्रसारण पर केंद्रित है। मोंटेसरी दृष्टिकोण मनुष्य के प्राकृतिक विकास पर केंद्रित है। मोंटेसरी शिक्षा के माध्यम से एक बच्चा एक पूर्ण मानव में बदल जाता है और अपने लिए, समाज के साथ–साथ पूरी मानवता के लिए एक आरामदायक क्षेत्र बनाता है। शिक्षा का मोंटेसरी मोड जिस सिद्धांत पर आधारित है, वह यह है कि जो बच्चे दी जा रही शिक्षा में रुचि नहीं रखते हैं और ऊब जाते हैं या तनावग्रस्त हो जाते हैं, वे समाज के लिए एक दायित्व हैं और वे अपनी मानसिक बीमारी के साथ–साथ समाज में भी योगदान देते हैं। ,

मोंटेसरी शिक्षा इस समझ के साथ शुरू होती है कि एक वयस्क या शिक्षक की भूमिका केवल बच्चे को उसकी छिपी और जन्मजात विकासात्मक शक्तियों को प्रकट करने में मदद करने के लिए है। जीवन के शुरुआती क्षणों से ही बच्चों में एक महान रचनात्मक ऊर्जा होती है जो

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

उनके मन के गठन और उनके शरीर के समन्वय का मार्गदर्शन करती है। मोंटेसरी दृष्टिकोण का मानना है कि बच्चे को वयस्कता तक पहुंचने के मार्ग में निर्देशित किया जाना चाहिए।

गिजुभाई बधेका का योगदान

गिजूभाई बधेका ने अपनी दृष्टि को क्रिया में बदलने के लिए कुछ प्रमुख रणनीतियाँ विकसित कीं। उन्होंने औपनिवेशिक शिक्षा की पूरी योजना को व्यवस्थित रूप से बदल दिया और भारतीय पर्यावरण और संस्कृति के अनुकूल एक शैक्षिक मॉडल की वकालत की। उन्होंने जिन रणनीतियों की वकालत की, उन्हें नीचे दिखाया गया है:

- शिक्षक मंदिर की स्थापना
- शिक्षण पत्रिका का प्रकाशन
- नूतन ब्लासिशन संघ का गठन
- बच्चों के लिए साहित्य बनाना
- उनके द्वारा स्थापित संस्थानों में वंचित समूहों को शामिल करना।

अध्यापक मंदिर: हम पहले ही देख चुके हैं कि गिजुभाई बधेका ने उन शिक्षकों को महत्व दिया जो बच्चों के सीखने के प्रारंभिक वर्षों में उनके साथ शामिल होते हैं। औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक शिक्षक प्रशिक्षण पर जोर नहीं देते थे। शिक्षकों को रचनात्मक शिक्षा के तरीकों की ओर उन्मुख करने के लिए, गिजुभाई बधेका ने 1925 में दक्षिणामूर्ति में अध्यापक मंदिर की शुरुआत की। बाद में 1936 में मतभेदों के कारण गिजूभाई बधेका ने दक्षिणामूर्ति को छोड़ दिया और राजकोट में एक अध्यापक मंदिर शुरू किया।

शिक्षण पत्रिका: यह 1925 में गिजूभाई बधेका द्वारा शुरू किया गया एक गुजराती मासिक था, जो विशेष रूप से शिक्षा की मौजूदा प्रणाली पर केंद्रित था। वे आलोचनात्मक लेख लिखते थे जिससे 'पूरे गुजरात में सनसनी' फैल जाती थी। इस संस्था ने विशेष रूप से माता–पिता के बीच और सामान्य रूप से बच्चों के लिए समग्र शिक्षा की आवश्यकता के बारे में जागरूकता पैदा की थी। इस प्रयास में उन्हें 'मोंटेसरी मदर' के नाम से विख्यात ताराबाई मोदक का पूरा सहयोग मिला। इस मासिक पत्रिका के माध्यम से गिजूभाई बधेका ने बाल शिक्षा की नई व्यवस्था की वकालत की और बच्चों को मिलने वाले लाभों के बारे में बताया। 1925 में भावनगर में शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए शिक्षाविदों, शिक्षकों, अभिभावकों और आम जनता को आकर्षित

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

करने के लिए एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। तीन साल बाद, यानी 1928 में, इसी तरह का एक सम्मेलन अहमदाबाद में आयोजित किया गया था।

बाल साहित्यः इन लेखनों के अलावा, गिजुभाई बधेका ने अपना ध्यान बाल साहित्य जैसे लघु कथाएँ, नर्सरी कविताएँ और साहसिक यात्रा कहानियों पर भी केंद्रित किया। हालाँकि उनका काम मुख्य रूप से बच्चों की शिक्षा पर केंद्रित था, बधेका ने वयस्क शिक्षा पर भी ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने 1930 में प्रौढ़ शिक्षा अभियान की शुरुआत की।

गिजूभाई बधेका ने 200 से अधिक पुस्तकें लिखीं। चूंकि उन्होंने बिना तनाव के बच्चों को शिक्षित करने के आसान तरीकों पर जोर दिया, इसलिए उन्होंने अपने शिक्षकों और माता–पिता से अपील करने के लिए 'यात्रा' और 'हास्य' का इस्तेमाल किया। उनके विचार लघुकथाओं, तुकबंदी, गीतों, नाटकों, किताबों, पैम्फलेटों और अखबारों के लेखों के माध्यम से व्यक्त किए गए। उनकी लेखन शैली प्रकृति में अद्वितीय थी और कथा माध्यम का उपयोग करती थी जैसे कि वे उनसे बोल रहे हों। उनकी अधिकांश पुस्तकें गुजराती भाषा में लिखी गईं और कुछ हिंदी में लिखी गईं।

नूतन बाल शिक्षण संघः ताराबाई मोदक ने 1926 में गिजूभाई बधेका के साथ मिलकर नूतन बाल शिक्षण संघ की स्थापना की। उन्होंने विभिन्न कम लागत वाले शैक्षिक सहायक उपकरण और उपकरण भी पेश किए

बच्चे क्योंकि उनका मानना था कि खेल और अन्य सह–पाठ्यचर्या गतिविधियों के माध्यम से ज्ञान को अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने भारत भर में बच्चों की शिक्षा के अपने मॉडल का बड़े पैमाने पर प्रचार किया, खासकर गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र और सौराष्ट्र क्षेत्र में।

बधेका का मानना था कि अकेले शिक्षक बच्चों को शिक्षित करने के लिए जिम्मेदार नहीं हैं, बल्कि यह माता–पिता, शिक्षाविदों, अभिभावकों और शिक्षकों को शामिल करने वाली एक भागीदारी प्रक्रिया होनी चाहिए।

वानरसेनाः भारत के सांस्कृतिक इतिहास से प्रेरित होकर, गिजूभाई बधेका ने एक समूह बनाया, जिसे उन्होंने 'वानरसेना' कहा। यह बाल सत्याग्रहियों की एक बटालियन थी। गिजुभाई, नानाभाई भट्ट और हरभाई त्रिवेदी के नेतृत्व में, दक्षिणमूर्ति संस्था समर्पित स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक प्रशिक्षण विद्यालय के रूप में उभरी।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

दक्षिणमूर्ति बालमंदिरः जैसा कि नाम से पता चलता है, दक्षिणमूर्ति संस्थान में नर्सरी सेक्शन को बालमंदिर कहा जाता था। 1915 में, गिजूभाई बधेका ने दक्षिणामूर्ति को संविधान का मसौदा तैयार करने में मदद की। उन्होंने भावनगर में एक छात्रावास भी शुरू किया। 1916 में उन्होंने कानूनी पेशे को छोड़ने का फैसला किया और दक्षिणामूर्ति में सहायक अधीक्षक के रूप में शामिल हुए और बाद में इस संस्था के प्राचार्य (आचार्य) बने।

गिजुभाई ने शुरू में मोंटेसरी शिक्षा की तकनीकों का उपयोग करके अपने बेटे को प्रशिक्षित किया। जब उन्हें विश्वास हो गया कि यह तनाव से राहत देने वाला है और शिक्षार्थियों को अन्वेषण करने की स्वतंत्रता देता है, तब ही उन्होंने इसे बड़े स्कूल सेटिंग्स में अपनाने का फैसला किया। परिणामस्वरूप दक्षिणामूर्ति बालमंदिर, अगस्त 1920 में एक प्री–प्राइमरी स्कूल अस्तित्व में आया। बाद में नानाभाई भट, हरिभाई त्रिवेदी और गिजुभाई बधेका ने भावनगर में श्री दक्षिणामूर्ति विनय मंदिर स्कूल का निर्माण किया।

समावेशी शिक्षा

गिजुभाई ने दलितों को दक्षिणामूर्ति संस्था में प्रवेश के लिए आमंत्रित किया। वह बारडोली सत्याग्रह के दौरान अपना घर छोड़ने वाले किसान परिवारों के पुनर्वास के लिए भी जिम्मेदार थे। उन्होंने जिस स्कूल की स्थापना की थी, वह अभी भी भावनगर के छोटे से शहर में मौजूद है, जहाँ शिक्षक गिजुभाई बधेका के पढ़ाने के तरीके का पालन करते हैं। यह शिक्षाविदों, शिक्षकों और शिक्षा के नवीन तरीकों में रुचि रखने वाले सभी लोगों के लिए एक ज़रूरी जगह है।

शिक्षा पर गिजुभाई बधेका के विचार

शिक्षा पर उनके विचारों को समझने से पहले हमें उन परिस्थितियों का विश्लेषण करना होगा जिसके कारण गिजूभाई का शिक्षा पर पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण था। सामान्य रूप से शिक्षा और विशेष रूप से शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में उनका योगदान बहुत अधिक है। वास्तव में उन्होंने शिक्षा को एक नया आकार और परिभाषा दी। वह शिक्षा की व्यवस्था से खुश नहीं थे, खासकर स्कूलों में पढ़ाने और सीखने के तरीके से। वह एक इतालवी शिक्षाविद् और विचारक मारिया मॉन्टेसरी से प्रभावित थे, और उदारतापूर्वक फ्रोबेल, डाल्टन और अन्य के शैक्षिक दर्शन का उपयोग करते थे। हालाँकि उन्होंने पश्चिम से विचार उधार लिए थे, उन्होंने व्यवस्थित रूप से इन विचारों को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाया। उनकी शिक्षा प्रणाली प्रकृति में स्वदेशी थी और भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने के अनुकूल थी।

शिक्षा के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलू

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

शिक्षा की मौजूदा प्रणाली को 'पुरानी जीवन प्रणाली' के रूप में खारिज करते हुए, बधेका ने शिक्षण–सीखने के तरीकों को तैयार किया जो भाषाओं और कलाओं पर केंद्रित थे। नियमित परीक्षाओं और अंकों से हटकर, बलेखा बच्चों को 'खोज' करने और 'आत्म–विकास' के लिए सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है। उन्होंने पहले इन नए तरीकों को अपने बेटे के साथ आजमाया और फिर दूसरों के साथ प्रयोग करना शुरू किया। गिजुभाई बधेका प्रयोग और प्रत्यक्ष अनुभव में विश्वास रखते थे। वह जानते थे कि प्रयोग करना आसान काम नहीं है लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। अपनी किताब डेड्रीम्स में उन्होंने कहा है.... "इसीलिए मैं प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहता हूं; मैं अपने निष्कर्षों को वास्तविकता पर आधारित करना चाहता हूं।"

शिक्षकों का बच्चों के प्रति रवैया

बच्चों के प्रति शिक्षकों का रवैया बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि छात्र विविध सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। शिक्षकों को बच्चों के प्रति मानवतावादी और सहानुभूतिपूर्ण रवैया रखना चाहिए। शिक्षकों को सूत्रधार होना चाहिए न कि अधिकारी। शिक्षक को छात्रों द्वारा पसंद और सम्मान किया जाना चाहिए। बच्चों को अपने शिक्षकों के पास जाने से डरना नहीं चाहिए। उन्हें अपने शिक्षकों के रवैये से प्यार करना चाहिए और उनकी सराहना करनी चाहिए और सीखने के अनुभव का आनंद लेना चाहिए।

गिजुभाई बधेका द्वारा सामना की गई चुनौतियाँ

हालांकि गिजुभाई बधेका ने प्रयोग के माध्यम से शिक्षण की एक नई पद्धति की शुरुआत की, लेकिन उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इनमें से कुछ का विश्लेषण अगले भाग में किया गया है।

पारंपरिक शिक्षण विधियों

छात्रों को एक नियमित प्रक्रिया के रूप में अक्षरों, संख्याओं और तालिकाओं को सीखने से अवगत कराया गया। सीखने की इस प्रक्रिया में सीखने के लिए कोई उत्साह, रुचि और प्रेम नहीं था।

यांत्रिक स्मृति

शिक्षक जोर देते हैं कि छात्र अवधारणाओं को समझने के बजाय पाठों को याद करते हैं। याद रखना अक्सर सीखने के प्रवाह को तोड़ देता है। संस्मरण के बारे में बधेका के अलग–अलग विचार थे। उन्होंने महसूस किया कि इसने बच्चों की रचनात्मकता को मार डाला।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

सज़ा

आम धारणा यह है कि सजा का डर छात्रों को सीखने से रोकता है। सजा स्कूलों में शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग था। बधेका ने सजा के विचार का विरोध किया और माना कि सीखना एक सुखद अनुभव होना चाहिए। उन्होंने रैंक और पुरस्कार की व्यवस्था का कड़ा विरोध किया। उनके अनुसार सीखने के बाद आंतरिक संतुष्टि का भाव होना चाहिए। इस प्रकार, उनकी शिक्षा प्रणाली में प्रतिबंध या दंड के लिए कोई स्थान नहीं है।

व्यक्तिगत स्वच्छता और शारीरिक स्वास्थ्य

शैक्षिक अभ्यास में व्यक्तिगत स्वच्छता और शारीरिक फिटनेस को सबसे कम प्राथमिकता दी गई। बधेका ने व्यक्तिगत स्वच्छता की पुरजोर वकालत की और कहा कि शारीरिक फिटनेस एक अच्छी सीखने की प्रक्रिया पर आधारित होनी चाहिए। उनका मानना था कि व्यक्तिगत स्वच्छता से सामाजिक अनुशासन आएगा।

दिवा स्वप्न

हालांकि उन्होंने बच्चों की शिक्षा और जरूरतों पर विस्तार से लिखा है। गिजूभाई की प्रमुख कृति 'दिवास्वप्न' इस विषय पर एक उत्कृष्ट योगदान के रूप में विशेष उल्लेख के योग्य है। यह पुस्तक बच्चे की शिक्षा में शामिल प्रक्रियाओं की व्याख्या करती है। 1932 में गुजराती में प्रकाशित, दिवास्वप्न का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। पुस्तक को मोटे तौर पर चार मुख्य भागों में विभाजित किया गया है, ये हैं:

- प्रयोग शुरू होता है
- प्रयोग की प्रगति
- अवधि के अंत में
- अंतिम सम्मलेन

पुस्तक ने नई अवधारणाओं और प्रयोगों को पेश किया। नई अवधारणाओं और प्रयोगों को शुरू करने में आने वाली चुनौतियों और प्रयोगों के परिणामों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। शुरुआत में गिजुभाई ने इन अवधारणाओं और तरीकों का इस्तेमाल अपने बेटे के साथ किया और बाद में चौथी कक्षा के बच्चों के साथ भी यही कोशिश की।

भाग 1: प्रयोग शुरू होता है

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

पुस्तक के पहले भाग का शीर्षक 'द एक्सपेरिमेंट बिगिन्स' है। इस अध्याय में लेखक असफलता के साथ प्रयोग करता है। संपूर्ण प्रयोग एक पाठ को समझने में वार्ड की विफलता पर केंद्रित है। गिजूभाई एक अनुभव बताते हैं जब शिक्षण के पहले ही दिन उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें अपनी योजनाओं के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिल सकती है। छात्र ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे थे और वे उसकी कक्षा में ध्यान नहीं दे रहे थे। गिजूभाई बधेका का मानना था कि बच्चों को विकसित करने के लिए जिस सबसे आवश्यक गुण की आवश्यकता है, वह सीखने में रुचि है।

गिजूभाई ने यह भी महसूस किया कि बच्चों में सीखने के प्रति प्रेम विकसित होना चाहिए और उनका मानना था कि यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया होनी चाहिए। वह अपने छात्रों के साथ पहली कक्षा में अपने अनुभव का वर्णन इन शब्दों में करते हैं – "लड़कों, मैंने कहा, आज हमारी कक्षा नहीं होगी। हम कल मिलेंगे। आप दिन की छुट्टी ले सकते हैं। 'दिन की छुट्टी' के शब्दों में। लड़के 'छुट्टी!' चिल्लाते हुए कक्षा से बाहर भागे। उसने कहा, तेवर। वह बहुत गुस्से में था। तुम नहीं कर सकते

छात्रों को बिना अनुमति के जाने दो, प्रधानाध्यापक ने सख्ती से कहा। यदि एक कक्षा के छात्र छूट जाते हैं, तो अन्य कक्षाओं के छात्र परेशान होंगे और पढ़ाई नहीं करेंगे३३. महोदय! मैंने कहा, पढ़ाते–पढ़ाते सब पीटने लगे हैं और इस पद्धति का सीधा परिणाम यह हुआ है कि बच्चे असभ्य, असभ्य, बेचैन और बेचैन हो गए हैं। यहाँ चार साल की शिक्षा के दौरान लड़कों ने, जैसा कि मैंने चिन्हित किया है, केवल यही सीखा है: शिक्षकों पर चिल्लाना और फुफकारना और ताली बजाना! उसे स्कूल पसंद नहीं है। देखो, जैसे ही उन्हें बताया गया कि उनकी छुट्टी है, वे कितनी खुशी से भाग गए! प्रधानाध्यापक इस तथ्य की सच्चाई से इंकार नहीं कर सके। क्या ऐसा है? उन्होंने कहा। ठीक है, हम देखेंगे कि आप इसके बारे में क्या करते हैं" (पृ. 6)।

शुरू में बधेका के पास कठिन समय था और उन्हें अपने सहयोगियों और प्रशासकों के क्रोध का सामना करना पड़ा। वह याद रखने की ऐसी यांत्रिक तकनीकों के इस्तेमाल के खिलाफ थे जिनका अभ्यास छात्रों द्वारा किया जाता था और शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित किया जाता था। उन्होंने एक अलग तरीके का इस्तेमाल करना पसंद किया जिसमें दिलचस्प कहानियों और रोमांचक खेलों का वर्णन शामिल था।

गीजूभाई ने अपनी कक्षाओं में कहानियाँ सुनाना शुरू किया। बच्चे इन कहानियों में तल्लीन हो गए और कक्षाओं के साथ–साथ शिक्षक में भी रुचि दिखाई। जैसे–जैसे दिन बीतते गए वे गिजूभाई से और कहानियाँ सुनाने का अनुरोध करते रहे और जो बच्चे कक्षा से बाहर हो

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

रहे थे, वे कक्षा के घंटों के बाद भी वहीं रुके रहे। गिजूभाई एक घटना का वर्णन इस प्रकार करते हैं – "बाहर," मैंने कहा, "स्कूल खत्म हो गया है। अब उतर जाओ!" "नहीं, हम नहीं करेंगे," कुछ चिल्लाए। आइए कहानी जारी रखें" (पृ.8)।

कहानी सुनाना न केवल छात्रों की रुचि बनाए रखने का बल्कि छात्रों और शिक्षक के बीच संबंध बनाने का भी सबसे अच्छा तरीका है। समय के साथ–साथ बच्चे कक्षा में और अपनी गतिविधियों में एक प्रकार की व्यवस्था विकसित करने लगे। विद्यार्थी इन विधियों के प्रति आकर्षित और रुचि रखते थे और कक्षा में उपयोग की जाने वाली अवधारणाओं को अधिक सार्थक तरीके से समझते थे। हालाँकि शुरू में बधेका को असफलताओं का सामना करना पड़ा, लेकिन इसने छात्रों को वास्तविक ज्ञान प्रदान करने के उनके दृढ़ संकल्प को नहीं डिगाया। अपने प्रयोग के दौरान उन्हें कई सामाजिक और नौकरशाही बाधाओं का सामना करना पड़ा। सकारात्मक सोच और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ उन्होंने अपने प्रयोग जारी रखे।

परीक्षा के बारे में

गिजूभाई बधेका के अनुसार बच्चों को परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए, लेकिन परीक्षा ही सब कुछ नहीं है। उन्हें पढ़ाई के साथ–साथ खेल खेलने की भी छूट दी जानी चाहिए। उन्होंने कागज–पेंसिल आधारित कार्यों में कोई रुचि नहीं दिखाई। उनका दिवास्वप्न विफलता, अपमान और संकल्प के तीन विचारों पर चर्चा करता है। उन्होंने कभी भी सख्त समय सारिणी का पालन नहीं किया और बच्चों को शिक्षित करने का उनका नया विचार पूरे दिन चलता रहा। एक दिन की शिक्षा को गतिविधियों, खेलों और कहानियों में विभाजित किया गया था। शिक्षकों को अपनी प्रवृत्ति का उपयोग करना होगा और अपने छात्रों की नब्ज को महसूस करना होगा और फिर तय करना होगा कि उन्हें ज्ञान प्रदान करने के लिए किस तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए। डेड्रीम सर्वश्रेष्ठ शिक्षण पद्धतियों पर एक ग्रंथ है जिसे विभिन्न प्रकार की कक्षा स्थितियों में अपनाया जा सकता है।

बधेका ने शिक्षा में माता–पिता की भूमिका पर भी विचार किया। माता–पिता को बच्चे की जरूरतों को समझना चाहिए और बच्चे की रुचि और उत्साह को पहचानना चाहिए। शिक्षक नवोन्मेषी शैक्षिक प्रयोग करके शिक्षक एवं छात्र दोनों के जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

सीखने की औपचारिक प्रक्रिया में, पाठ्यपुस्तकें और पाठ्यक्रम दो पूर्व–आवश्यकताएँ हैं, और छात्र और शिक्षक दोनों उनका पूरी तरह से पालन करते हैं। बधेका ने पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रम को कोई महत्व नहीं दिया। उनके अनुसार खेलों के माध्यम से वास्तविक शिक्षा प्राप्त

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

की जा सकती है। अपने दिवास्वप्न में वे लिखते हैं कि "खेल ही वास्तविक शिक्षा है। महान शक्तियाँ खेल के क्षेत्र में जन्म लेती हैं। खेल चरित्र निर्माण के लिए होते हैं (पृ.20)।

बड़ेका के विचार और धार्मिक शिक्षा के विरुद्ध बच्चों को मूल्य शिक्षा देना उनके शब्दों में देखा जा सकता है "..." हमें धर्म को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। माता–पिता को प्रयास करना चाहिए और शिक्षकों को प्रयास करना चाहिए। हम बच्चों को पुराणों और उपनिषदों की कहानियाँ सुना सकते हैं, जब भी उनकी पाठ्यपुस्तकों में इनका उल्लेख किया जाता है। आइए हम उन्हें संतों की कहानियाँ सुनाएँ जैसे हम उन्हें ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की कहानियाँ सुनाते हैं, हम अपने बच्चों को पवित्र छंदों को कंठस्थ न करने दें!

पुस्तकालय

गिजूभाई की अपनी कक्षा में एक पुस्तकालय बनाने की योजना शुरू में विफल रही, लेकिन बाद में सफल हो गई। बच्चों में कहानी सुनने के साथ–साथ कहानी सुनाने में भी रुचि थी। उन्हें किसी भी कहानी की किताब को पढ़ने का मौका नहीं मिला बल्कि केवल पाठ्यपुस्तकें पढ़ने का मौका मिला। इसलिए गिजूभाई ने कक्षा के भीतर एक पुस्तकालय स्थापित करने के बारे में सोचा।

अधिकारियों ने बधेका के प्रयास का समर्थन नहीं किया। माता–पिता और जमीन के सामाजिक रीति–रिवाज भी बाधा बन जाते हैं। लेकिन वह जानता था कि तीनों शिक्षक, छात्र और माता–पिता मिलकर बच्चे को एक संपूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने में मदद कर सकते हैं। रुचि न दिखाई देने पर भी शिक्षा का कार्य अधूरा ही रहेगा। इसलिए उन्होंने एक अभिभावक बैठक की व्यवस्था की। हालाँकि, बधेका को बहुत खराब प्रतिक्रिया मिली क्योंकि आमतौर पर यह माना जाता था कि एक बच्चे को शिक्षित करना एक शिक्षक की एकमात्र जिम्मेदारी थी और यही कारण था कि बच्चों को स्कूल भेजा जाता था।

गीजूभाई को अपने प्रयोग में कई चुनौतियों और असफलताओं का सामना करना पड़ा, लेकिन वे कभी निराश नहीं हुए और हमेशा वैकल्पिक तरीकों की तलाश करते रहे। भारत में मौजूदा शिक्षा प्रणाली में जहां स्कूल केवल पढ़ने के लिए था, गिजूभाई ने कहानियों, खेलों और नाटकों के माध्यम से मूल्य शिक्षा प्रदान करके एक विराम दिया। उसने महसूस किया कि उसकी कक्षा के सभी छात्रों को कहानी की किताबें पढ़ने में गहरी दिलचस्पी थी, लेकिन वास्तव में कुछ ही छात्रों ने उन्हें पढ़ा था। हालाँकि, वे सभी अपनी पाठ्य पुस्तकें पढ़ चुके थे। चूँकि वे जानते थे कि अगर उन्हें कहानी की किताबें उपलब्ध करा दी जाएँगी तो वे उन्हें पढ़ना शुरू कर देंगे, इसलिए गीजूभाई ने ऐसा करने की पहल की।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

भाग 2: प्रयोग की प्रगति

गिजूभाई का मानना था कि डर बच्चे के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। भय को दूर करने और आत्मविश्वास का निर्माण करने से प्राकृतिक शिक्षा और विकास होता है। दूसरे भाग 'प्रयोग की प्रगति' में गिजूभाई बधेका उन बच्चों को डिक्टेशन देने का फैसला करते हैं जो शुरू में उनके फैसले से सहमत होते हैं और विरोध भी करते हैं। "उनमें से कुछ ने कहा, कृपया हमें उस गद्यांश पर एक नज़र डालने दें जिसे आप लिखने का इरादा रखते हैं ताकि हम गलतियाँ न करें" (पृ.20)। उन्होंने बच्चों की मांगों को मान लिया।

बेशक, बच्चे बहुत कुछ सीखते और याद करते हैं, लेकिन बहुत कम ही वे 'क्यों' और 'कैसे' सवाल पूछते हैं। गीजूभाई ने कक्षा में जो पढ़ाया जाता है, उससे परे जाकर जाँच करने का कौशल विकसित किया।

गिजुभाई के लिए, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देना था न कि छात्रों की रैंकिंग करना। इस प्रकार, उन्होंने रैंकिंग की रूढ़िवादी पद्धति का विरोध किया। उन्होंने तर्क दिया कि प्रत्येक बच्चे की अपनी क्षमता और क्षमता का स्तर होता है। वह कहते हैं, 'पीटने से सबक मिलता है, इसलिए हर किसी को रोज पिटना चाहिए!'

गिजूभाई के अनुसार यदि विद्यार्थी सीखने में रूचि नहीं रखते हैं तो उन्हें बाध्य नहीं किया जाना चाहिए बल्कि स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए। छात्र केवल कुछ प्रकार की गतिविधियों में रुचि रखते हैं। हर बच्चा अनोखा होता है और उसकी अपनी पसंद–नापसंद होती है। पसंद को विकसित करना चाहिए और नापसंद को त्याग देना चाहिए। उन्होंने महसूस किया कि बच्चों को केवल उन्हीं विषयों में महारत हासिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिनमें उनकी रुचि हो।

एक ही पद्धति का उपयोग करके विभिन्न विषयों को सीखना समान रूप से प्रभावी नहीं हो सकता है। गीजूभाई को कहानी सुनाकर इतिहास पढ़ाना बहुत पसंद था। उनका मानना था कि बच्चे किसी घटना को परीक्षा के लिए याद करने के लिए मजबूर करने के बजाय कहानी के रूप में सुनाए जाने पर उसे बेहतर ढंग से याद रखेंगे।

भाग 3: अवधि के अंत में

गिजूभाई का दृढ़ विश्वास था कि कोई भी गतिविधि या शिक्षण तभी सफल हो सकता है जब कोई छात्र इसे समझे। एक बार गिजुभाई के प्रयोग के दौरान, एक सामाजिक सभा थी,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

और छात्रों को नाटक करना था, गाना गाना था और अन्य सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ करनी थीं। गिजूभाई की कक्षा के बच्चों ने दूसरों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया क्योंकि उन्हें अपनी पसंद के अनुसार करने की आज़ादी थी।

गिजूभाई ने रटकर याद करने की प्रणाली का कड़ा विरोध किया। उन्होंने यह भी कहा कि रुचि और प्रेम से प्राप्त किसी भी ज्ञान के लिए पुरस्कार या प्रशंसा की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि ज्ञान और संतुष्टि ही पुरस्कार के रूप में कार्य करते हैं। बच्चों को पढ़ाने के लिए गिजूभाई हमेशा दिलचस्प तरीके अपनाते थे। उन्होंने व्याकरण और भूगोल को इस तरह पढ़ाया कि उनमें रुचि पैदा हुई और छात्रों को लगा कि उन्हें मज़ा आ रहा है। 'नाटक के माध्यम से सीखो' उनकी शिक्षण रणनीति थी। उन्होंने शिक्षण के औपचारिक तरीकों का उपयोग नहीं किया। इसके बजाय उन्होंने ताश के खेल के रूप में व्याकरण और अंताकादी नामक खेल के रूप में भाषाएं और क्षेत्र यात्राओं के माध्यम से भूगोल पढ़ाया।

बधेका को न तो परीक्षाओं का डर था और न ही छात्रों के रैंक या पास होने या फेल होने की चिंता थी। वह कहते हैं, 'मेरे पास चिंतित होने का कोई कारण नहीं था। मैंने शिष्यों से कहा, 'तुम ठीक वैसे ही करोगे जैसे तुम रोज करते हो। बेशक, आप परीक्षा पास करने जा रहे हैं; लेकिन हम दूसरों को दिखाना चाहते हैं कि हम क्या कर रहे हैं" (पृ.50)।

गिजूभाई ने महसूस किया कि बच्चों को निश्चित पाठ्यक्रम और निश्चित पाठ्यपुस्तकों के अलावा विभिन्न स्रोतों का उपयोग करके अपने ज्ञान को विकसित करने के लिए सिखाया जाना चाहिए। बच्चों को शैक्षणिक विषयों के साथ–साथ अनुशासन, साफ–सफाई और स्वच्छता की शिक्षा देने की जरूरत है। गलियों में खेले जाने वाले साधारण खेल भी स्कूल में खेले जा सकते हैं यदि वे आदेश की ओर ले जाते हैं। बच्चे नाटकों के माध्यम से कई नए खेल और अवधारणाएँ सीखते हैं। बधेका ने अपने छात्रों को प्रकृति से नमूने एकत्र करना भी सिखाया ताकि वे इसकी विविधताओं को समझ सकें।

गिजूभाई ने कभी भी छात्रों को रैंक देकर उनकी क्षमता का आकलन नहीं किया। उन्होंने महसूस किया कि रैंकिंग या ग्रेडिंग के परिणामस्वरूप केवल दुर्भावना और ईर्ष्या की भावना पैदा होती है और बच्चों के बीच अस्वास्थ्यकर प्रतिस्पर्धा पैदा होती है। आनंद के लिए और आनंद के साथ सीखना उनका आदर्श वाक्य था। इन्हीं गुणों को आत्मसात करते हुए उनकी कक्षा के बच्चों ने एक मासिक पत्रिका भी निकाली जो उनकी रुचियों और प्रतिभाओं की अभिव्यक्ति थी।

भाग 4: अंतिम सभा

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

गिजूभाई एक सीधे–सादे और दृढ़निश्चयी व्यक्ति थे। अपने प्रयोग के दौरान, उनके सहयोगियों और अधिकारियों द्वारा उनका विरोध और आलोचना की गई। लेकिन इससे उनका प्रयोग करने का संकल्प नहीं डिगा और बाल विकास के नए तरीकों की उनकी खोज अनवरत जारी रही। उनके सहकर्मी टिप्पणी करते थे कि उनकी सफलता उनकी अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के कारण थी, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अपनी नौकरी खोने का डर नहीं था। लेकिन गिजूभाई का तर्क था कि 'किसी में उत्साह, आत्मविश्वास और लक्ष्य के प्रति बेहिचक समर्पण होना चाहिए।' सिर्फ अंग्रेजी जानने से प्रयोग सफल नहीं हो जाते। यह एक लंगड़ा बहाना है जब कोई काम नहीं करना चाहता। कुंजी नवप्रवर्तन करने का अंतर्ज्ञान है और यह एक कारण के लिए आत्मा की तड़प से आती है।'

शिक्षा प्रणाली पर गिजूभाई के अपने विचार थे। उनका मानना था कि यह जाँच करना शिक्षक का पूर्ण कर्तव्य और उत्तरदायित्व है कि बच्चे उत्साह और इच्छा के साथ सीख रहे हैं या नहीं। परीक्षा–शिक्षा प्रणाली को अस्वीकार करते हुए वे कहते थे, 'विद्यार्थी सीखने की आंतरिक ललक के साथ स्कूल आते हैं, जब उन्हें ऐसे शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है जो शिक्षण की कला जानते हैं और इसके प्रति उत्साही होते हैं'।

गिजूभाई का दृढ़ विश्वास था कि "शिक्षकों को अपना स्वयं का परीक्षक होना चाहिए। वे अपने छात्रों की क्षमताओं और उनके खराब प्रदर्शन के कारणों के बारे में किसी और से अधिक जानते हैं। वे सबसे अच्छा निर्णय कर सकते हैं कि कोई छात्र पदोन्नति के लिए उपयुक्त है या नहीं।" या नहीं। गिजूभाई का मानना था कि बच्चों में सीखने की क्षमता के विभिन्न स्तर होते हैं। कुछ सीखने में रुचि रखते हैं, अन्य नहीं; अन्य केवल कुछ विषयों में रुचि रखते हैं। उनका विचार था कि जो लोग औपचारिक स्कूली शिक्षा में रुचि नहीं रखते हैं उन्हें इन औपचारिक सेटिंग्स से हटा दिया जाना चाहिए और उनके हितों को आगे बढ़ाने के लिए भेजा जाना चाहिए।

उन्होंने तर्क दिया कि विषयों को बच्चों की उम्र और उनकी ग्रहणशीलता के आधार पर पेश किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए भूगोल जैसे विषयों को पढ़कर नहीं समझा जा सकता। फिर भी, गिजूभाई ने मानचित्रों पर छात्रों को मार्ग दिखाकर और 'आइए हम यात्रा करें' नामक एक खेल खेलकर भूगोल में रुचि विकसित की, जिसमें प्रत्येक छात्र ने कल्पना की कि वह एक यात्रा पर है और यात्रा की योजना बनाई, स्थानों पर नोट्स बनाए। मार्गों को सीखा। देखने लायक और उन जगहों की अनूठी विशेषताएं।

गिजुभाई बालेखा का शैक्षिक दर्शन

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

बधेका का शिक्षा दर्शन अद्वितीय है। उन्होंने 'स्वर्ग' को आधार बनाकर यांत्रिक शिक्षा के स्थान पर बालक के सुख, स्वास्थ्य, आनंद और शांति को सर्वाधिक महत्व दिया। बधेका ने अपने विचारों को इस प्रकार रेखांकित किया:

1. सन्तान के सुख में ही स्वर्ग है
2. स्वर्ग बच्चों का स्वास्थ्य है
3. स्वर्ग एक आनंद है
4. स्वर्ग बच्चों की चंचल मासूमियत है
5. स्वर्ग बच्चे के गीतों और चंचल गुनगुनाहट में निहित है

गिजुभाई ने मूल रूप से मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया। मानवतावाद मुख्य रूप से एक बच्चे की आत्म–अवधारणा में निहित है। उनके अनुसार बच्चे को सबसे पहले अपने बारे में अच्छा महसूस करना चाहिए। अगर बच्चे में खुद के बारे में सकारात्मक समझ है, तो उसकी क्षमताओं में निश्चित रूप से सुधार होगा। बच्चा भी अपनी कमजोरियों को समझने की कोशिश करता है और सुधारने की कोशिश करता है। उन्होंने वकालत की कि सीखना अपने आप में एक अंत नहीं है; यह आत्म–विकास के शिखर को प्राप्त करने का साधन है। इस विशेष अवधारणा को 'आत्म–वास्तविकता' कहा जाता है।

गिजुभाई बधेका के अनुसार, आंतरिक पुरस्कार बाहरी पुरस्कारों की तुलना में अधिक शक्तिशाली और प्रभावी होते हैं। एक बच्चे को शिक्षा की आवश्यकता महसूस होनी चाहिए। बच्चे को पुरस्कारों, पदकों, सितारों, रैंकों या पदों के लालच के बजाय आत्म–प्रेरित होना चाहिए।

निष्कर्ष

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। हालाँकि, रचनात्मक शिक्षा आगे की शिक्षा और आजीवन सीखने की नींव है। सीखने की जगह में स्वतंत्रता वह बिंदु है जिस पर भडेका ने जोर दिया। उन्होंने शिक्षा के पारंपरिक तरीकों की आलोचना की जो नौकरशाही बाधाओं से बाधित थे। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को खारिज कर दिया जो बच्चों को विशेष रूप से प्रारंभिक वर्षों में 'मुक्त' और 'प्राकृतिक' वातावरण में सीखने की स्वतंत्रता नहीं देती थी। वह शिक्षा की मोंटेसरी प्रणाली से प्रभावित थे और ज्ञान संचरण के वैकल्पिक तरीकों के साथ प्रयोग करने का साहसिक कदम उठाया।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

अपने द्वारा स्थापित विशेष संस्थानों के माध्यम से, बडेका ने शैक्षिक प्रशासन और कॉलेजों के प्रतिरोध पर काबू पाते हुए अपनी पहल को आगे बढ़ाया।

गुजराती और हिंदी दोनों में बधेका के लेखन में उनके विचार शामिल थे जो सरल, व्यावहारिक और सीधे आगे थे। उनकी सीखने की प्रक्रिया का पूरा ध्यान प्रयोग पर था जिसमें खेल, कहानियाँ और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ शामिल थीं जो ज्ञान को प्रसारित करने के साधन के रूप में थीं। रैंकों और परीक्षाओं द्वारा क्षमताओं का निर्धारण करने की प्रणाली का विरोध करते हुए, बधेका ने कक्षा में एक ऐसा वातावरण बनाने पर जोर दिया जो छात्रों को शिक्षक की बात मानने के बजाय 'खोज' करने के लिए प्रोत्साहित करे। गिजूभाई की पुस्तक दिवास्वप्न में शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण के सिद्धांत शामिल हैं और आज शैक्षिक सिद्धांत और व्यवहार में वैकल्पिक प्रतिमानों की गवाही के रूप में खड़ी है।

संदर्भ

1. बदेखा, गिजुभाई (1981) अपना बालासाहित्यकारो। कुमाकुमा प्रकाशन।
2. (1985) बालावासो आराः सेठानी कंपानी।
3. (1985) रामकथा ग्रंथमालाः गणपति बापा। आरा : सेठानी कम्पानी।
4. (2004) किशोर कथाओ (4 किताबों का सेट) (गुजराती). गुर्जर प्रकाशन।
5. (2012) दिवास्वप्न गुर्जर साहित्य प्रकाशन.
6. जनक, मकवाना और कमलेश मंदिर (2013)। गिजुभजय बलेखा का मुल्यंकर
7. एपबबड, एलएलसी।
8. मेहता, यशवंत और श्रद्धा त्रिवेदी (2012)। गिजुभाई बधेका, श्रेष्ठ बलवर्तो
9. गुर्जर प्रकाशन।
10. सुरती, आबिद (2011)। गिजूभाई का गिल्डदस्ता (हिंदी में 20 किताबों का सेट)। नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया।